



خطر الأفلام الكرتونية على الأطفال

الدكتور الشيخ هيثم بن سرحان

هيندي

باللغة الهنرية

انুবاده: سابير هوسين پتر موممده موزيبور رهمان



<https://sarhaan.com>

<https://mahadsunnah.com>



प्रत्येक शिशु फ़ितरत -ए- इस्लाम अर्थात प्राकृतिक स्वभाव पर पैदा होता है।

परंतु उसके माता-पिता उसे यहूदी, नसरानी तथा मजूसी अर्थात ज्यूज़, क्रिस्चन या पारसी बना देते हैं।

हमारे पास यह समस्या इन दिनों कार्टून फिल्मों की है, जो बालकों को जादू सिखाते हैं।

कार्टून फिल्मों में जादू दिखाना कुछ ऐसा हो गया है मानो जिस पर आम सहमति है एवं जो सामान्य रूप से मान्य है।

कार्टून का प्रभाव छोटे बच्चों पर सामान्यतः इस प्रकार भी देखा गया है कि जब उसके दांत गिर जाते हैं तो वह किस का रुख करता है? सूर्य का।

तथा सूरज से कहता है: "ओह, सूरज, ओह सूरज।" क्यों तुमने मेरा सही दांत ले लिया?! अबोध बालक यह समझता है कि सूरज उसको विवाह की आयु तक पहुँचाता है अथवा बुढ़ापे की उम्र तक उसे लेकर जाता है।

जबकि ऐसी आस्था रखना यह शिर्क -ए- अकबर अर्थात महा बहुदेववाद है।

हमारे बीच का अबोध बालक उसी सोच के अनुसार बड़ा होगा जिसकी आदत उसके पिता ने उसको दिया है।